Dr Vinod Baitha
Deptt of Economics
Marwari college Darbhanga

Economics D.II HONS Lecture-19

भारत में बहुराष्ट्रीय निगमों की भूमिका

ROLE OF MULTINATIONAL CORPORATIONS IN INDIA

बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ वह निगम या संगठन होते हैं जो अपने देश की तुलना में एक या एक से अधिक देशों में वस्तुओं या सेवाओं के उत्पादन को नियंत्रित करते हैं इसे अन्तर्राष्ट्रीय निगम या एक राज्य विहिन कम्पनी भी कहा जाता है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को अपने देश के अलावा कम से कम एक अन्य देश में सेवाएँ और जन्म सम्पति होती है। ऐसी कम्पनियों के विभिन्न देशों में कार्यालय और कारखाने होते हैं और आम तौर पर एक केन्द्रीय एवं प्रधान कार्यालय होता है जहाँ पर वे वैश्विक प्रबंधन की व्यवस्था करते हैं।

बहुराष्ट्रीय निगम ऐसी विशाल फर्में होती है जिनका प्रधान कार्यालय तो देश में स्थित होता है किन्तु वे अपनी व्यापारिक क्रियाएँ बहुत से अन्य देशों में फैलाती हैं इन्हे कभी कभी राष्ट्रपारिय निगम Transnational corporation भी कहा जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि इनकी मूल क्रियाएँ देश में प्रारंभ होने के बाद अन्य देशों में भी फैल जाती हैं। आई. बी. एम. वर्ल्ड ट्रेड कॉरपोरेशन के अध्ययन के अनुसार एक बहुराष्ट्रीय निगम वह है। जो (i) अनेक देशों में कार्य करता है (ii) उन देशों में विक्रय, निर्माण तथा अनुसंधान का कार्य करता है। (iii) जिनका बहुराष्ट्रीय प्रबंधन होता है। (iv) जिनका स्वामित्व बहुराष्ट्रीय होता है इस प्रकार बहुराष्ट्रीय निगम या कम्पनी एक ऐसी व्यवसायिक संस्था है जिनका व्यवसाय एवं कारोबार अपने जन्म स्थान के देश के अतिरिक्त अन्य देशों में फैला होता है, इन्हे अन्तर्राष्ट्रीय निगम या बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के नाम से भी जाना जाता है।

इस प्रकार बहुराष्ट्रीय निगम एक उद्यम होता है जिनकी क्रियाएँ अपने देश के बाहर अनेक देशों में फैली रहती है ऐसे निगमों को अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनी या बहुराष्ट्रीय कम्पनी या निगम या राष्ट्रपारिय निगम के नाम से जाना जाता है।

बहुराष्ट्रीय निगम की विशेषताएँ - Features of Multinational corporation

बहुराष्ट्रीय निगमों की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित है।

1. बड़ा आकार — बहुराष्ट्रीय निगम का आकार बहुत बड़ा होता है। बहुराष्ट्रीय निगम का आकार इनकी आय बिक्री दोनों ही दृष्टिकोण से बहुत बड़ा होता है।

2. अन्तर्राष्ट्रीय क्रिया कलाप — इन निगमों की क्रियाएँ किसी एक देश में सीमित न होकर कई देशों में फैली रहती हैं उदाहरण के लिए फिलिप्स को ही लिजिए। यह इंग्लैन्ड की कम्पनी है किन्तु इसके व्यापार का क्षेत्र भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, म्यांमार, बंगलादेश सहित विश्व के अनेक देशों में फैला हुआ है।

3. स्वामित्व — इन निगमों की पूँजी में हिस्सा अनेक राष्ट्रों में फैला होता है बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की जितनी देशों में शाखाएं होती हो उसके अनुसार उसका स्वामित्व और पूँजी उतनी ही देशों में फैला होता है।

4. प्रबंधन - बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का प्रबंधन भी बहुराष्ट्रीय होता है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के प्रबंधन मंडल में अनेक राष्ट्रों के व्यक्ति शामिल रहते है। और उनका प्रबंधन करते रहते हैं

5. उत्पाद की किस्म को प्राथमिकता — बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के उत्पाद की किस्मों Quality को सामान्यतया सर्वोच्च प्राथमिकता देती हैं। जिनके बल बूते पर यह कम्पनी विश्व के बाजारों पर अपना नियंत्रण स्थापित करने में सफलता प्राप्त कर लेती हो

6. विज्ञापन, विक्रय या प्रचार पर जोर — बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा अपने उत्पादों को अधिक आकर्षक बनाने के लिए एवं विक्रय के लिए प्रचार-प्रसार पर बड़ा जोर देती हो विक्रय को बढ़ाने के लिए बार-बार विज्ञापन या प्रचार का कार्यक्रम चलाया जाता है जिससे उसका उत्पाद की विक्रय क्षमता बढ़ रहे।

7. कारोबार का विशिष्टीकरण — बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अपने उत्पादों को बढ़ाने के लिए प्रतियोगिता में बने रहने के लिए कम्पनी के कारोबार को सामान्यतः विशिष्टीकरण होता है जिसके कारण दूसरी कोई भी कम्पनी उस उत्पाद का उत्पादन नहीं कर सकती हो। उदाहरण स्वरूप लिप्टन का चाय में तथा कोका कोला का पेय पदार्थों में विशिष्टीकरण का प्रभाव देखा जाता है।

भारत में निजी क्षेत्र एवं बहुराष्ट्रीय निगमों की भूमिका :—

भारत के आर्थिक विकास में जहाँ विदेशी पूँजी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है वही बहुराष्ट्रीय निगमों का भी योगदान रहा है इनके कारण देश में प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों का विदोहन हुआ है। देश में औद्योगिकरण, स्वस्थ प्रतिस्पर्द्धा, विपणन, उन्नत, तकनीकि में सुधार अनुसंधान आदि कार्यों को बढ़ावा मिलता है। इनके योगदान को निम्न

बिन्दुओं में दर्शाया गया है।

1. आधार भूत क्षेत्रों का विकास — बहुराष्ट्रीय निगमों ने अर्थव्यवस्था के आधारभूत क्षेत्रों के विकास के लिए पूंजी, तकनीकि ज्ञान, साहस व जोखिम उठाकर सहयोग प्रदान किया है।

2. प्राकृतिक संसाधनों का विदोहन :— बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा विनियोजित पूंजी के सहयोग से प्राकृतिक संसाधनों के विदोहन में सहयोग मिला है भारत में खनिज तेल की खोज में इनकी भूमिका उल्लेखनीय रही है।

3. विपणन में भूमिका :— बहुराष्ट्रीय निगमों ने विपणन कार्य की कुशलता से का निर्यात को बढ़ावा दिया है। इसके लिए बाजार शोध, विज्ञापन, विपणन सूचनाओं का प्रकाशन, सूचनाओं का प्रसारण, भंडारण, प्रबंध, पैकेजिंग आदि का भी विकास किया है। जिससे वस्तु उपभोक्ता तक उचित प्रकार से पहुँच सके।

4. रोजगार में भूमिका — बहुराष्ट्रीय निगमों ने वृहत स्तर पर रोजगार के (औसर) अवसर पैदा कर रोजगार के औसर दिये है। जिससे देश में रोजगार सुविधाएँ बढ़ी हैं।

5. शोध एवं विकास में भूमिका — इन निगमों ने शोध एवं विकास पर पर्याप्त मात्रा में व्यय किया है तथा मुख्य कार्यालय के शोध एवं विकास का लाभ शाखा कार्यालय व सहायक कम्पनियों को भी दिया है। इसमें अल्पविकसित देशों के औद्योगिकरण में सहायता मिली है।

6. ज़ोखिम उठाने में भूमिका :— बहुराष्ट्रीय निगम अपने साधनों अनुभव एवं तकनीकि के आधार पर जोखिम उठाने को तैयार हो जाते हैं इससे देश में दूर संचार, सड़क, परिवहन, सौर-ऊर्जा, विद्युत उत्पादन आदि क्षेत्रों में विकास हुआ है।

7. प्रबंध कुशलता में वृद्धि — बहुराष्ट्रीय निगमों उच्च योग्यता प्राप्त पेशेवर को रखने में समर्थ है। जब ये निगमें दूसरे देशों में कार्य करती है। तो इन्हें भी इनके प्रबंधको के योग्यता का लाभ मिलता है।

8 भुगतान शेष पर अनुकूल प्रभाव — बहुराष्ट्रीय निगमों की कार्य विधियों का आतिथ्य देश के भुगतान शेष पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है इसके पास विश्वव्यापीकरण बाजार उपलब्ध होता है। जिसकी सहायता से ये विकासशील देशों के निर्यातों में वृद्धि कर सकते हैं;

9- तकनीकी लाभ — बहुराष्ट्रीय निगमों ने भारत में उपलब्ध

सस्ते श्रम का लाभ प्राप्त करने के लिए उत्पादन तकनीक में अनेक बार परिवर्तन किये जिससे उत्पादन आधुनिक और अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से प्रतियोगी बन गया जो देश के हित में रहा है।

इस प्रकार भारत के आर्थिक विकास में विदेशी पूँजी के महत्व के साथ बहुराष्ट्रीय निगमों का देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के कारण देश में प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों का सम्पूर्ण विदोहन हुआ है देश में औद्योगिकरण, स्वास्थ्य प्रतिस्पर्द्धा, विपणन उन्नत, तकनीकि, उत्पादन तकनीकी में सुधार अनुसंधान आदि कार्यों को बढ़ावा मिला है बहुराष्ट्रीयों निगमों के आने से देश की अर्थव्यवस्था में सुधार हुआ है।